REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | JUNE - 2024

ताजमहल का टेंडर- नाटक में व्यंग्य बोध

श्रीमती वहीदा खानम दाऊदजी[1] , डॉ. शकीला बेगम मुस्तफा[2]
[1]पी.एच.डी शोधार्थी , उच्च शिक्षा और शोध संस्थान , दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड, कर्नाटक.
[2]सहायक प्राध्यापक , उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, धारवाड, कर्नाटक.

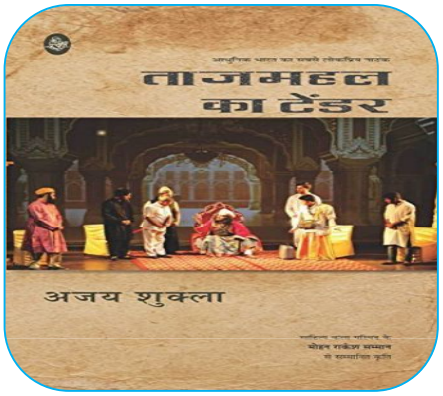

आज व्यंग्य का मूल, प्रहार है, जो सुधार की भावना लिये हुए है | व्यंग्य में एक गहराई अपेक्षित है और साथ ही प्रहारात्मक स्थिरता भी है । व्यंग्य का अर्थ परिवर्तन है । हिन्दी में व्यंग्य सामान्य बोलचाल में कटाक्ष, ताना मारना, बोली-ठोली आदि का पर्याय बन गया है । अतः इन दोनों तत्वों के आधार पर व्यंग्य का अस्तित्व बना है । जनता को शोषण और अत्याचार के प्रति सचेत और सजग करने तथा रंगमंच को एक सफल जनतांत्रिक हथियार की तरह प्रयुक्त करने की दृष्टि से व्यंग्य नाटकों का साहित्य में खास महत्व है । व्यंग्य नाटक के प्रति गिरिराज शरण अग्रवाल अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं – "किंतु जब नाटक व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा हो तो वह केवल अभिनय नहीं रह जाता, वह घटनाओं और परिस्थितियों के साथ समझौता करने के मूड में नहीं होता, वह प्रहारक, मारक और कभी-कभी सुधारक भी हो जाता है । उसकी चोट प्रत्यक्ष नहीं होती, मार दिखाई नहीं देती, सुधारक उपदेशक नहीं होता । सब कुछ पीछे-पीछे से होता है; किंतु होता जरूर है ।"[1]

अजय शुक्ला का रंगनाटक 'ताजमहल का टेंडर' व्यंग्य के माध्यम से भ्रष्टाचार, बेईमानी तथा झूठ का खुलासा करता है । अजय शुक्ला ऐतिहासिक व्यंग्य नाटककार हैं । इनका प्रथम नाटक 'दूसरा अध्याय' था । इस नाटक के लिए उन्हें साहित्य कला परिषद द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ है । 'ताजमहल का टेंडर' के लिए उन्हें मोहन राकेश सम्मान से पुरस्कृत किया गया है । 'ताजमहल का उद्घाटन' उनका तीसरा नाटक है । प्रस्तुत नाटक 'ताजमहल का टेंडर' में अजय शुक्ला जी ने आज के व्यवस्था में नाटक का आधार यह परिकल्पना की है कि मुगल बादशाह शाहजहाँ इतिहास से निकलकर अचानक बीसवीं सदी की दिल्ली में गद्दीनशीन हो जाते हैं, और अपनी बेगम की याद में ताजमहल बनवाने की इच्छा प्रकट करते हैं । नाटक में बादशाह के अलावा बाकी सभी वातावरण वर्तमान समय का है । ताजमहल बनाने का टेंडर प्रशासन के चीफ इंजीनियर गुप्ता जी को दिया जाता है । गुप्ताजी इस संदर्भ का भरपूर उपयोग लेने की योजना बनाते हैं । वे अपने पी.ए. सुधीर के साथ सलाह करते हैं ।

"सुधीर : बहुत बड़ा खेल लगता है सर ।

गुप्ताजी : हाँ; वाकई में बहुत बड़ा खेल है । ठीक से खेला जाए तो अरबों में जा सकता है । इट्स आ हंड्रेड मिलियनज़ गेम ।"[2]

इस भ्रष्टाचारी खेल में ठेकेदार भईयाजी का प्रवेश होता है । तीनों मिलकर शाहजहाँ को लूटने की योजना बनाते हैं ।

"गुप्ताजी : ताजमहल के टेंडर में तो अभी वक्त़ लगेगा । फिलहाल तो ताजमहल कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन की ऑफ़ीस बिल्डिंग का टेंडर निकाल रहा हूँ ।"[3]

आज भारत में भ्रष्टचार तेजी से बढ़ रहा है । । इसकी जड़े तेजी से फैल रही है । जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से मुक्त नहीं है । भ्रष्टाचार तब होता है जब कोई व्यक्तिगत लाभ के लिए सौंपे गए अधिकार का दुरुपयोग करता है । इससे संबंधित पक्षों के बीच अविश्वास उत्पन्न हो सकता है । इसके अतिरिक्त, यह किसी देश के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यह व्यवस्था को कमजोर कर सकता है और देश की आर्थिक वृद्धि में बाधा बन सकता है । इस प्रकार, इसके परिणामस्वरूप और भी अधिक असमानता और सामाजिक विभाजन पैदा हो सकते हैं । यदि समय रहते इसे नहीं रोका गया तो यह पूरे देश को अपनी चपेट में ले लेगा । इसीलिए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए नई विधि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 का विशेष महत्व है । इसमें लोक सेवकों द्वारा किये जाने वाले भ्रष्टाचार के साथ ही भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने में शामिल लोगों के लिए दंड का प्रावधान है । इसके अंतर्गत रिश्वत लेने और रिश्वत देने को अपराध की श्रेणी में रखा गया है । पुलिस अधिकारियों का भ्रष्टाचार निवारण में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं । भ्रष्टाचार निवारण की प्रक्रिया को अजय शुक्ला 'ताजमहल का टेंडर' नाटक में विजिलेंस इंसपेक्टर द्वारा व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

"सेठी : एक में तो एक चपरासी ने एक आदमी से चाय पीने की माँग की । तो उसे रँगे

हाथों चाय पीते हुए पकड़ा । एक क्लर्क वहीं पर ऑफिस का एक पेन जेब में दबाए घूम रहा था । उसे भी धर दबोचा । दोनों फूलप्रूफ केस बने ।

गुप्ताजी : बड़ा अच्छा किया । ऐसे ही ये करप्शन कम होगा । बताइए, चपरासी लोग

ब्लैकमेल करके चाय पिएँ और क्लर्क सरकारी सामान को ही उठा ले जाए । ऐसे तो सरकार ही बिक जाएगी।"[4]

इस प्रकार इस प्रोजेक्ट में ठेकेदार, नेता, विजिलेंस इंस्पेक्टर, प्रदुषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी शर्मा, अकाउंट्स अधिकारी चोपड़ा भागीदार बनते हैं और अपने-अपने अधिकारों का नाजायज फायदा उठाते हैं । देखते ही देखते पच्चीस साल गुजर जाते हैं । इन पच्चीस सालों में गुप्ताजी का अपना बंगला, फाइव स्टार होटल, फॉम हाउस और सुधीर जी अपनी पचास एकड़ ज़मीन में एक दो मंजिली झोंपड़ी बनवा चुके हैं । सच ही कहा गया है, आज तो ईमानदारि का ज़माना ही नहीं रहा । अजय शुक्ला सुधीर और गुप्ताजी के माध्यम से ईमानदार आदमी पर व्यंग्य करते हैं ।

"गुप्ताजी : अच्छा कर रहे हो । ईमानदार आदमी को रिटायर होने से पहले दो जून रोटी और सोने के लिए एक छत का इन्तजाम जरूर कर लेना चाहिए ।

सुधीर : पर साब, आजकल ईमानदार आदमी को कोई जीने ही कहाँ देता है ।"[5]

अधेड़ बादशाह बूढ़े होकर बिस्तर पकड़ लेते है । ताजमहल का उनका सपना अधूरा ही रह जाता है । ताजमहल का टेंडर तब पास होता है, जब वे इस दुनिया से विदा ले चुके होते हैं । बेहद चालाक और भ्रष्ट अफसर गुप्ता जी शाहजहाँ को अपनी झूठे वादों व बातों में ऐसा घुमाता है कि केवल ताजमहल का टेंडर निकालने में ही पच्चीस साल लग जाते हैं । इसी बीच ताजमहल बनवाने के ख्वाहिश के साथ ही शाहजहाँ की मौत हो जाती है । तभी गुप्ताजी सुधीर से कहते हैं-

"सुधीर, मैं तुमको एक बात बताता हूँ, सुन लो। वक्त गया बात गई
पर हम नहीं जाएँगे। फिर कोई ताज का ख़्वाब देखेगा, तब हम फिर
बुलाए जाएँगे, तब ये फाइल फिर काम आएगी। समझ गए। चलो
अब यहाँ से चलते हैं।"[6]

नाटक का यह अंतिम संवाद हमारे समय पर एक करारा व्यंग्य है जो बताता है कि भ्रष्टाचार सर्वकालिक और सार्वजनिक है। ज्योतिश्वर मिश्रा ने इस नाटक की आलोचना करते हुए लिखा है-" ताजमहल का टेंडर नामक व्यंग्य नाटक में ताजमल के स्वप्नदर्शी निर्माता मुगल बादशाह शाहजहाँ को आज के प्रशासनिक अधिकारियों, इंजीनियरों और ठेकेदारों के बीच लाया गया है। सर्वसत्ता सम्पन्न सम्राट का हुक्म और ख्वाब रिश्वत और फाइलों के चक्रव्यूह में दम तोड़ देते हैं। ऐसी भयावह स्थिति में आम आदमी की क्या स्थिति होगी, इसका अनुमान किया जा सकता है।"[7] इसी संबंध में जयदेव तनेजा के विचार हैं- " प्रबंध व्यवस्था और व्यापक सामाजिक सरोकारों के नाम पर अपनी-अपनी स्वार्थसिद्धि में आकण्ठ डूबे रिश्वतखोर नेताओं और लाखों-करोड़ों रुपये हजम कर जाने वाले अफसरों के बीच फँसा एक निरंकुश शहंशाह तक अत्यंत और दयनीय लगने लगता है।"[8]

इस नाटक द्वारा अजय शुक्ला यह बताना चाहते है कि आज पैसे के अलावा और किसी चीज का कोई महत्व नहीं रह गया है। चोर, बेईमान और भ्रष्टाचारी शान से सरेआम सड़कों पर घूम रहे हैं। पर उनके आलिशान बंगला, फाइव स्टार होटल तथा फॉर्म हाउस ने उनके मुखौटों को बेनकाब कर दिया है। पच्चीस साल में चीफ इंजीनियर के देख-रेख में बनाए जाने वाले 'ताजमहल' के टेंडर तक नहीं निकाल पाये। ऐसे में वर्तमान काल में साक्षात 'ताजमहल' को देखना तो असंभव ही कहा जा सकता है। यह नाटक आज के समय की अंध प्रवृत्ति तथा जीवनमूल्यों के विनाश का प्रमाण है।

संदर्भ

1. गिरिराज शरण अग्रवाल, मंचीय व्यंग्य एकांकी, भूमिका
2. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, पृ.सं.15
3. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, पृ.सं. 23
4. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, पृ.सं. 46
5. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, पृ.सं. 77
6. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, पृ.सं. 80
7. ज्योतिश्वर मिश्रा, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक :एक मूल्यांकन, पृ.सं. 128
8. अजय शुक्ला, ताजमहल का टेंडर, जयदेव तनेजा की भूमिका, पृ.सं. 2